सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज
दिनांक 09 अगस्त 2015, रविवार
(नोएडा)

! राधा–स्वामी.!

हमारा मन जो है उस मालिक के मन का अंश है, जो क्वालिटी उस मालिक के मन में है, वही क्वालिटी हमारे मन में है, क्यों? एक शेर है, उस शेर में कितनी शक्ति है, उसका एक बच्चा होता है, छोटा सा बच्चा, जब वो बच्चा बडा हो जाता है, उसमें सारी शक्तियाँ आ जाती है। उस मालिक ने अपने मन की कल्पना से ये सारी कायनात बना दी, उसी का अंश हमारा मन है और हमारे मन में भी सारी शक्तियाँ हैं। लेकिन क्या है? जब हम इस संसार में आ गए तो इस संसार की चमक–दमक में सब भूल गए और हमारे मन के ऊपर इस संसार की जो धूल मिट्टी है (काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, मोह) जम गई। जब हम इस संसार में आते हैं तो हमारा मन एकदम Pure होता है, लेकिन जब हम इस संसार में घुसते जाते हैं, इस संसार की धूल मिट्टी (मैल) हमारे मन पर जमती जाती है और तह पर तह जम जाती है और हमारा मन अपनी सारी औकात भूल जाता है। देखो हमारे मन में कितनी शक्ति है, अभी मैं यहाँ बैठा हूँ ना, एक सैकिंड मैं अमेरिका पहुँच जाता हूँ। न्यू–र्याक पहुँच जाता हूँ और वहाँ का सारा नजारा मुझे नजर आ रहा है। कितनी शक्ति है हमारे मन में, इस मन से हम कुछ भी कर सकते हैं।

मैने एक किताब पढी उसमें मन की शक्ति के बारे में लिखा था कि मनुष्य मन की शक्ति से क्या–क्या कर सकता है। उसमें ऐसी–ऐसी घटनाएँ हैं जिन्हें सुनकर आदमी हैरान हो जाता है। पहले मैं सोचता था कि ऐसे चमत्कार तो भगवान ही कर सकता है। लेकिन मेरा सोचना गलत था, अगर मैं कहता हूँ ऐसे चमत्कार तो भगवान ही कर सकता है, मनुष्य ने कैसे किया? तो मैं महा झूठा हूँ। क्यों? क्योंकि मैं ही तो भगवान हूँ, इसलिए मैं ही ऐसे काम कर रहा हूँ। मैं कौन हूँ?
साईंटिस्ट कहते हैं ये Univers 13½ बिलियन साल पुराना है। और Bing-Bang Theory के अनुसार एक विस्फोट हुआ और ये सारा Univers बन गया। हम भी तो यही कहते हैं, हम अपने तरीके से कहते हैं, मालिक ने कल्पना की, एक बिंदू बन गया और उसमें विस्फोट हो गया और ये Univers बन गया। अब सोचो 13½ बिलियन साल पहले क्या था? Vaccum, only Dark Vaccum, लेकिन कुछ तो था जिसमें विस्फोट हो गया, जो Some Body था जिसने Dot बनाया था, हम कहाँ थे? हम भी उसी में थे, किस हाल में थे? Molecular Form में थे या Shell के Form में थे या आत्मा के Form में थे, लेकिन हम थे, नही तो हम कहाँ से आ गए? सब कुछ था पेड–पौधे, जल, पृथ्वी, अग्नि, सब कुछ था, पहले उसी में था, तो जब सब कुछ उसी में था, हम भी उसी में थे। इससे Proof होता है कि We are Part of Him जब हम उसी का हिस्सा थे तो हम क्या थे? हम भी वही थे। एक समुद्र से आप एक लोटा पानी निकालो, वो एक लोटा पानी क्या है? वो भी तो पानी है, तो जब हम उसके अंदर थे, तो हम क्या थे? वही थे। We are Part of God, हम उसी के अंश हैं और शेर का बच्चा क्या होता है? शेर का बच्चा शेर होता है, तो जब हम शेर के बच्चे हैं तो हम क्या हैं? हम भी शेर हैं। जो उसका (मालिक) का मन करामात कर सकता है, वो हमारा मन भी कर सकता है। तो जो मेरा Statement था, जब मैंने वो किताब पढी कि मनुष्य ने ऐसे–2 काम किये हैं, मनुष्य ऐसे चमत्कार कैसे कर सकता है? ऐसे चमत्कार तो केवल भगवान ही कर सकता है, तो मेरा कहना गलत था, I Was Wrong, क्यों? क्योंकि तुम खुद God हो और वो चमत्कार God ही करता है, फिर इसमें आश्चार्य की क्या बात है। लेकिन हमारी बदकिस्मती यह है

कि हम पत्थर के एक पुतले के सामने खडे होकर कहते हैं– हे भगवान हम पर दया करो, जबकि वो पुतला हमसे कहता होगा, हम पर दया करो।

कामी तरे, क्रोधी तरे, पापी तरे अनंत।

आन उपासक, कृतघ्न, तरे ना नाम रटंत।

कामी भी तर जाते हैं, क्रोधी भी तर जाते हैं, पापी भी तर जाते हैं लेकिन दो तरह के आदमी नही तरते हैं– एक आन उपासक और दूसरा कृतघ्न। आन उपासक वो होता है जो अपने को और भगवान को अलग समझता है, दो समझता है और भगवान को ढूँढने बद्रीनाथ, केदारनाथ जाता है। उसको बोलते हैं आन उपासक, वो कैसे तरेगा? जो अपने को और मालिक अलग समझता है। एक पुतले को भगवान समझकर उसकी पूजा करता है, उसी को बोलते हैं आन उपासक, जो भगवान को दूसरा समझता है, जबकि दूसरा कोई है ही नही।

''प्रेम गली अति सांकरी, जा में दो ना समाई।।

एक नमक की डली समुद्र का Bottom ढूँढने जाती है, वो कहती है इस समुद्र का Bottom कहाँ हैं, मैं ढूँढती हूँ, वो नीचे जाते–2, अभी Bottom आया भी नही उससे पहले ही सागर बन जाती है। इसका क्या मतलब हुआ? दो कुछ है ही नही, वो नमक की डली और सागर दो नही हैं, एक ही है, गलते–2 एक हो गया। इसी को बोलते हैं ''प्रेम गली अति सांकरी जा में दो ना समाई'' अगर आपको God से मिलना है, अंग्रेजी में कहते हैं–Self Realisation is God Realisation अगर आपको भगवान ढूँढना है, भगवान की खोज में जा रहे हो (Cherity Begain his Home) अपने आप से शुरू करो, मैं कौन हूँ? पहले अपने आपको ढूँढो तुम कौन हो? तुम्हें अपना पता ही नही है, दूसरे को ढूँढने लग जाते हो। पहले अपने आपको ढूँढो, तुम कौन हो? कहाँ से आये हो? कहाँ जाना है? ढूँढो पहले, इन सवालों के जबाब ढूँढो, एक बार आप अपने आपको खोजने निकलोगे, आप वही नमक की डली हैं जो समुद्र की तह ढूँढने निकली, ढूँढते–ढूँढते, ढूँढते–ढूँढते, एक दिन आप उसी में समा जाओगे, क्योंकि एक ही है, दो नही है और जिस दिन आप उसी में समा जाओगे, आप कहोगे ओ हो ! जिसे मैं ढूँढ रहा था, वो तो मैं ही हूँ। समझो मेरी बात को, दूसरा कोई है ही नही, एक ही है। 13½ बिलियन पहले जब कुछ नही था, तो वहाँ क्या था? हम सब थे, एक ही था ना, अब भी एक ही है और वही एक अभी भी है।

नही रूप कोई हैं सब रूप तेरे।

मालिक का कोई रूप नही है, लेकिन हम सब उसी के रूप हैं। आपको मेरी बात समझ में आ रही है? तो इससे हम क्या सबक निकाल सकते हैं, इससे हम एक बहुत बडा सबक निकाल सकते है कि जो फरियाद लेकर हम गुरू जी के पास जाते हैं, संत के पास जाते हैं, वो फरियाद हम खुद (Solve) कर सकते हैं।

शब्दानंद महाराज और मानव दयाल महाराज भी हमारे जैसे थे, हमारे जैसी आंखे थी, हमारे जैसे हाथ–पैर, हमारे जैसे ही खाना खाते थे और हमारे जैसे ही कपडे पहनते थे, फिर हममें और उनमें क्या फर्क था? हम दौडे–दौडे जाते थे, महाराज जी बचाओ–महाराज जी बचाओ, हम पर मुसीबत आ गई, पिछली बार एक औरत आ गई मेरे पास, उसके हाथ में चीनी थी, मुझसे कहने लगी महाराज जी, मेरे पास एक गया है, उसको बच्चा (बछडा) होने वाला है, आप प्रसाद बना दीजिए ताकि बछडा सही से हो जाए, मैंने भगा दिया उसको, मैने उससे कहा– अभी मैने पशुओ के लिए प्रसाद बनाना सीखा नही है। अभी उनको पता ही नही है कि गुरू क्या है? हम समझते हैं गुरू एक चमत्कारी बाबा है, जो चमत्कार से हमारे लिए सोने की चेन, सोने की अँगुठी बनायेगा। गुरू किसलिए आता है संसार में आज तक किसी ने समझा ही नही, एक जेल है उसमें हजारो कैदी हैं। एक सेठ आता है, वो देखता है अरे ये बेचारे भूखे हैं, इनको ठीक से खाना नही मिलता है, वो खाना मंगवाता है और उनका पेट भरता है, लेकिन जेल के अंदर ही। दूसरा सेठ आता है, वो देखता है,

अरे इतनी ठण्ड है, ये कैदी बेचारे ठंण्ड मे कैसे सोते होंगे, वो कंबल मंगवाता है और सबको देता है, लेकिन जेल के अंदर ही। फिर एक दयालू सेठ आता है, वो क्या करता है, वो ना खाना देता है, ना बिस्तर देता है, वो जेल का दरवाजा खोल देता है, निकलो सारे औा सबको आजाद कर देता है। वो जो तीसरा दयालू सेठ था, वो ही गुरू है और वो ही गुरू का काम है। ये जो संसार है ये बहुत बडा जेल है, हमको समझ नही आती है, हम समझ नही पाते हैं। हम समझते हैं कि हम आजाद पंक्षी है इस संसार में, लेकिन हम आजाद पंक्षी नही हैं, क्या आप अपनी मर्जी से कोई काम कर सकते हैं? एक औरत है उसको लडकियाँ ही लडकियाँ हो रही हैं, क्या वो अपनी मर्जी से लडका बना सकती है? एक लडका है वो इंजीनियर या डॉक्टर बनना चाहता है, लेकिन बन जाता है क्लर्क, क्या वो आजाद पंक्षी है? इसी तरह सारे संसार में कोई भी आजाद पंक्षी नही है। हम अपने कर्मों में बंधे हुए हैं। हम इस जेल में हैं और यहाँ का जेलर काल है। जो इस संसार का जेलर है, उसको कभी–कभी दया आती है, चलो यार इसकी सजा पूरी होने में 6 महीने रह गए हैं छोड दो इसे। लेंकिन वो जो जेलर (काल) है, किसी पर दया नही करता। Strict Follow of Law, जब काल की जेल में कोई छूट नही है, फिर हम कैसे आजाद पक्षी है? हमारे हाथ–पैर में मोटी–मोंटी रस्सियाँ बँधी हुई हैं, हमें दिखाई नही देती। काल नही चाहता कि मेरे चुंगल से कोई छूटे, किसी को नही जाने देता वो, अगर कोई दयाल के पास आता है, तो समझो वहाँ मातम छा गया, क्यों? क्योंकि जो दयाल के पास गया वो काल के चुंगल से छूट गया। जहाँ किसी सच्चे संत का सत्संग चल रहा होगा, वहाँ कोई ऐसा आदमी आएगा, जो कहेगा अरे यहाँ क्या है? चलो मैं तुमको ले चलता हूँ, वहाँ कितनी भीड है हजारों में लोग हैं, गुरू जी की लम्बी दाडी, मातियों की माला, चलो वहाँ पर, कौन है वो आदमी? वो आदमी काल का एजेंट है।

समुद्र में एक जहाज जा रहा था, तूफान आ गया। जहाज डूब गया, उसमें से एक आदमी बच गया। वो लकडी के एक फटटे के सहारे तैरता गया और एक टापू पर पहुँच गया। वहाँ टापू पर खाने के लिए कुछ नही था, सिर्फ छोटे–छोटे जानवर थे। अब वो टापू पर पहुँच गया, अब वहाँ क्या करेगा वो, पेट तो भरना है, पत्ते खा–खाकर उसका मन भर गया। अब उसने जानवर पकडने शुरू किये, लेकिन वो जानवर भाग जाते थे, उसके हाथ में आते ही नही थे। उसने क्या किया? उसने उन जानवरों के बच्चे पकड लिए और सबकी एक–एक टाँग तोड दी, अब वो भाग नही सकते थे, वो बडे होते गए। अब वो आदमी आसानी से उनको पकडता और खा जाता था। काल भी ऐसे ही कर रहा है हमारे साथ। वो क्या करेगा? एक सेठ है, उससे मंदिर बनवायेगा, धर्मशाला बनवायेगा, सेठ ने अच्छा काम किया ना, लेकिन उसको मुक्ति नही हुई इस संसार से, उसे फिर से जन्म लेना है। आप कितने भी मंदिर बनवाओ, कितनी भी धर्मशाला बनवाओ कोई मुक्ति नही है। लेकिन एक फर्क है, पिंजरा तो पिंजरा है चाहे सोने का हो, चाहे लोहे का हो। तो काल ऐसे काम करवाता है हमसे। लेकिन दयाल ऐसे काम नही करवाता, वो कुछ भी नही करवाता। दयाल कहता है सिर्फ मुझसे प्रेम करो, वो प्रेम का मार्ग सिखाता है, क्यों? क्योंकि God is Love & Love is God, वो जो मालिक है हमारे अंदर किस रूप में है? वो हमारे अंदर प्रेम के रूप में है और हमारी Body में उसका क्या स्थान है? वो रहता है हमारी आंखों में, किस Form में है, In the form of love, अभी मैंने दो बच्चे बैठाये, सबसे पहले मैंने क्या कहा– आंखे खोलो, मेरी आंखों में देखो और मेरा ध्यान करो, क्यों? क्योंकि मैंने अभी से (Catch me Young) बीज डाल दिया है और ये बीज समय के साथ फलेगा और ये भगवान की खोज करेंगे और इनको गुरू मिलेगा। हरेक का गुरू निश्चित है। आप ये नही कह सकते हैं? भईया मुझे गुरू करना है, मुझे गुरू बताओ, ये तरीका नही है गुरू ढूँढने का, ऐसे तो आप किसी ठग के पास पहुँच जाओगे। आप टी. बी. पर देखते हो शुबह से शाम तक 72 गुरू, उनमें से केवल 10 प्रतिशत को ही सच्चाई का पता है और जो 10 प्रतिशत हैं जिनको पता है सच्चाई का, वो भी आपको सच्चाई नही बतायेंगे, क्यों? क्योंकि अगर उन्होने तुमको सच्चाई बता दी,

उनकी दुकान बंद हो जाएगी, इसलिए वो हमको गुमराह करके हमारी जेबे खाली करते जाते हैं। क्योंकि जिस दिन हमको सच्चाई बता दी फिर हम सोचेंगे कि हम क्यों उसके पास जाएं। सच्चाई क्या है? सच्चाई ये है कि You Are God, फिर तुमको उसके पास जाने की क्या जरूरत है, अगर उसने तुमको ये सच्चाई बताई फिर तुम उसके पास जाना ही छोड दोगे, फिर उसकी दुकान बंद, इसलिए कोई सच्चाई नही बताता, सब झूठ में हमको बाँध कर रखते हैं और हमको गुलाम बनाते हैं। लेकिन एक सच्चा संत चेले नही बनाता, वो सोचता है मेरे चेले मेरे जैसे बन जाएं। उसकी हरदम यही इच्छा रहती है कि मेरे चेले मेरे जैसे बन जाएं। क्यों? क्योंकि उसे दुकान बंद होने का लालच नही है। इसलिए वो सच्चाई खोलकर बता देता है कि भाई तुमको मेरे पास आने की जरूरत नही है, तुम खुद वही हो। परम दयाल जी महाराज, मानव दयाल जी महाराज, शब्दानंद जी महाराज, सब खोलकर सच्चाई बताते थे, कोई राज नही रखा। राज वो रखते हैं जिसे अपनी दुकान बंद होने का डर रहता है। ये सब काल कराता है।

एक बाबा था जो जंगल में एक पेड के नीचे रहता था। गांव वाले आते थे, रोटी देकर जाते थे अगर नही आते थे, तो भी खु,श रहता था। गांव में एक आदमी था, वो उस बाबा के पास बैठा रहता था, वो कुछ नही कहता था और बाबा भी उससे कुछ नही कहता था। वो जो आदमी था उसका बेटा बाहर विदेश में रहता था। उस बेटे ने उस आदमी को वापिस अपने पास बुलाया, पिताजी आप वापिस मेरे पास आ जाओ। तो उसके घर में सारी चीजें संसारी थी, लेकिन एक चीज ऐसी थी जिसे देखकर उसे लगा ये संसारी नही है, वो थी रामायण। उसने सोचा में जा रहा हूँ, पता नही बाद में क्या होगा, वो उस रामायण से प्रेम करता था। तो उसने सोचा बाकी चीजों की मुझे परवाह नही है, लेकिन इस रामायण का क्या करूँ? उसको Idea आ गया, वो जंगल में बाबा है, वो रख सकता है रामायण को। वो रामायण को लेकर जंगल में पहुँच गया और बाबा से बोला– बाबा मुझे बाहर (विदेश) जाना है, मेरे पास रामायण है, आप इसे अपने पास रख लो, पता नही पीछे से मेरे बच्चे इसकी देखभाल कैसे करेंगे। बाबा ने कहा– कहाँ है मेरे पास जगह इसे रखने की, तो वो आदमी जिद कर गया, नही बाबा रखो इसे अपने पास, तो वो उस रामायण को वहीं रख कर चला गया। अब बाबा को रामायण की चिंता हो गई, पहले बाबा मस्त था, खाना आया तो खा लिया, नही आया तो नही खाया। अब वो सोचने लगा इस रामायण का क्या करूँ? इसे कैसे संभाल कर रखूँ, तो उसने जंगल से लकडियाँ इकटठी करीं, झौंपडी बनाई और वो रामायण रखी। अब गांव के और लोग भी आने लगे, कहने लगे यहाँ बाबा रहता है और उसके पास रामायण भी है, ये तो जरूर कोई सिद्ध पुरूष होगा, चलो भाई उसके दर्शन करके आते हैं। दिन पर दिन भीड बढने लगी और उसमे एक सेठ भी आ गया। सेठ ने देखा बाबा तो धूप में, बारिश में ऐसे ही बैठे रहते हैं, कुछ तो करना चाहिए बाबा जी के लिए। अब उसने गांव के 8–10 आदमी इकटठे किये और उनसे बोला फंड इकटठा करो। सब जगह–जगह जाकर पर्चियाँ काटने लगे, पैसा इकटठा किया और बाबा जी के लिए एक आश्रम बनवाया। जब आश्रम बन गया तो दूर–दूर से और लोग आने लगे, आमदनी बढने लगी, फिर लंगर चालू हो गया, कर्मचारी बढ गए, धर्मशाला में कमरे बन गए। लोगो को रात में सोने की व्यवस्था हो गई, बाबा के लिए अलग कमरा बन गया। सिंहासन बन गया, बाबा को सिहांसन पर बैठाया गया। अब खर्चा बढ गया, रोज हजारों का खर्चा होता था, अब ये खर्चा कहाँ से आये? तो फिर बाबा बडे–बडे सेठों कों पकडने लग गया। सेठ जी यहाँ एक कमरा बनवा दो, दूसरा सेठ आया, सेठ जी ये जगह छोटी पड रही है, इसे और बढवा दो। इस तरह आश्रम बढता गया। अब बाबा के कपडे भी बदल गए, महंगे कपडे और आभूषण आ गए। किसी ने मातियों की माला डाल दी, किसी ने मुकुट लगा दिया। अब आश्रम का खर्चा पूरा करने के लिए जगह–जगह चेले भेज दिए कलैक्शन करने के लिए। अब वो जो आदमी था जिसने रामायण दिया था, वो विदेश से वापिस आ गया। अब वो विदेश से वापिस आया तो उसको रामायण याद आ गई। अरे भाई मैने रामायण

दिया था बाबा को, अब वो गया बाबा के पास, देखा अरे कहाँ गया बाबा? यहीं बैठा रहता था। उसने वहाँ आस–पास एक–दो आदमियों से पूछा–भाई यहाँ पेड के नीचे एक बाबा बैठा रहता था, अब वो बाबा कहाँ चला गया? उन्होने कहा– वो देखो बडा आश्रम, उसमें रहता है, वो उसी का आश्रम है। वो गया वहाँ पर, पहले ही गेट पर रोक लिया। कहाँ जा रहे हो? बाबा से मिलना है। वो बोले अभी आप बाबा से नही मिल सकते हो, अभी बाबा से मिलने का टाईम नही हुआ है। वो बोला कब मिलेगा टाईम बाबा से मिलने का, वो बोले आप 4.00 बजे आ जाओ। वो 4.00 बजे आ गया, उसे बाबा से मिलने की इजाजत मिल गई। उसने बाबा को प्रणाम किया और बोला– बाबा आप मुझे पहचानते हो? बाबा बोला– नही, कौन हो आप? पहचानने से इंकार कर दिया। वो बोला– बाबा मैंने आपको एक रामायण दिया था। बाबा बोला– हाँ–हाँ याद आ गया मुझको, उसने अपने चेले को कहा– अरे एक रामायण थी, जरा उसको देखकर लाना, कहाँ रखी है। चेला गया उसको ढूँढने, बोला– बाबा जी रामायण नही मिली। बाबा ने कहा– अरे देखो सही से, वो कहीं रखी होंगी। चेला दुबारा गया और किसी कबाडखाने में से रामायण को उठाकर लाया, बोला– हाँ जी है, फटा–पुराना था, उसका कवर भी फट गया था। बाबा ने वो रामायण उसको दिया, वो आदमी उस रामायण को लेकर वापिस अपने घर चला गया।

आये थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास।

! राधा–स्वामी !